आचार्य श्री हरिभद्रसुरीश्वर जी महाराज विरचित

श्री योगदृष्टि समुच्चय

| योग की आठ दृष्टि |

‘योगदृष्टिसमुच्चय’ ग्रंथ श्री हरिभद्राचार्य ने संस्कृत में रचा है।
ये दृष्टियाँ आत्मदशामापी (thermometer) यंत्र है।

—श्रीमद् राजचंद्र
उपदेश नोंध-४

| योग की आठ दृष्टियों का विकासक्रम |

क्रम	योग दृष्टि	योगांग	दोष-त्याग	गुण-विकास	बोध-उपमा	स्थिति
1	**मित्रा**	यम	खेद	अद्वेष	तृणअग्निकण	मिथ्यात्व
2	**तारा**	नियम	उद्वेग	जिज्ञासा	गोमय अग्निकण	मिथ्यात्व
3	**बला**	आसन	क्षेप	शुश्रुषा	काष्ठ अग्नि कण	मिथ्यात्व
4	**दीप्रा**	प्राणायाम	उत्थान	श्रवण	दीपप्रभा	मिथ्यात्व
5	**स्थिरा**	प्रत्याहार	भ्रांति	बोध	रत्नप्रभा	सम्यक्त्व
6	**कांता**	धारणा	अन्यमुद्	मीमांसा	ताराप्रभा	सम्यक्त्व
7	**प्रभा**	ध्यान	रोग	प्रतिपत्ति	सूर्यप्रभा	सम्यक्त्व
8	**परा**	समाधि	आसंग	प्रवृत्ति	चंद्रप्रभा	सम्यक्त्व

योग की आठ दृष्टि में, परम सुख
उपदेश है, क्रम है ये विकास का,
शुद्धि के संकेत का,
सुनो योग दृष्टि
सुनो योग दृष्टि...

1| मित्रा दृष्टि में योग अंग यम, और है खेद त्याग,
अद्वेष गुण आता है पर, बोध तृण अग्नि समान,
करता सब धर्म-काण्ड पर, मिथ्यात्व भाव है आत्मा पर
सुनो योग दृष्टि...

2| तारा दृष्टि में योग अंग नियम, और है उद्वेग त्याग,
जिज्ञासा गुण उठता है पर, बोध गोमय अग्नि समान,
धर्म जगत में मन रहे पर, मिथ्यात्व भाव है आत्मा पर
सुनो योग दृष्टि...

3| बला दृष्टि में योग अंग आसन, और है क्षेप त्याग,
शुश्रूषा गुण जागता पर, बोध काष्ठ अग्नि समान,
सुने समझे धर्म को पर, मिथ्यात्व भाव है आत्मा पर
सुनो योग दृष्टि...

4| दीप्रा दृष्टि में योग अंग प्राणायाम, और उत्थान त्याग,
श्रवण गुण है जागता पर, बोध दीप प्रभा समान,
धर्म क्रिया में मन रहे पर, मिथ्यात्व भाव है आत्मा पर
सुनो योग दृष्टि...

5| स्थिरा दृष्टि में योग अंग प्रत्याहार, और भ्रांति त्याग,
स्वबोध गुण है प्रकटता और, रहता रत्नप्रभा समान,
भ्रांति चित्त की टल रही और सम्यक्त्व प्रकटे निज मही
सुनो योग दृष्टि...

6| कांता दृष्टि में योग अंग धारणा, और अन्यमुद त्याग,
मीमांसा गुण है प्रकटता और, बोध तारा प्रभा समान,
सूक्ष्म विचारों को ग्रहे और, सम्यक्त्व आत्मा में रहे
सुनो योग दृष्टि...

7| प्रभा दृष्टि में योग अंग ध्यान, और राग-द्वेष त्याग,
प्रतिपत्ति गुण प्रकटता और, बोध है सूर्य समान,
विवेक जागता आत्मा में, सम्यक्त्व वृद्धि साथ में
सुनो योग दृष्टि...

8| परा दृष्टि में योग अंग समाधि, और आसंग त्याग,
वृत्ति रहती 'एक' में और, बोध है चंद्र समान,
अनंत अनहद रस जगे और सम्यक्त्व का शृंगार सजे
सुनो योग दृष्टि...

श्री योगदृष्टि समुच्चय

Reference handout for Paryushan Parva 2018

Compiled and explained by **Sri Ben Prabhu**

Shrimad
Rajchandra
Mission
Delhi

© Shrimad Rajchandra Mission Delhi, 2018

DPID: DBLH2018YDS01